2 अगस्त 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आगम का प्रतिपाद्य सन्मात्र वस्तु है और अध्यात्म का प्रतिपाद्य चिन्मात्र वस्तु है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-36

वर्ष : 32, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

32 वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 26 जुलाई से 4 अगस्त, 2009 तक चल रहे 32 वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन दिनांक 26 जुलाई को श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन नीरु कैमिकल्स दिल्ली ने की।

सभा को संबोधित करते हुये विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शुरु होने की कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि आज महाविद्यालय से निकले 550 विद्यार्थी सब मेरे अपने हैं। मुझे खुशी है इस बात की कि आज देश की सभी मुमुक्षु संस्थाओं में हमारे महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों ने अपनी बाग-डोर संभाल रखी है। मेरा सभी के लिये समान आशीर्वाद है। उन्होंने अपने उद्बोधन में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली का उल्लेख करते हुये विदुषी राजकुमारी बेन एवं ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के कार्यों की सराहना की।

साथ ही वर्तमान माहौल को मद्देनजर रखते हुये उन्होंने कहा कि इस जीवन में मेरा किसी के प्रति कोई बैर-विरोध नहीं है तथा मैं अपने साथ कोई कलुषता ले जाना भी नहीं चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि यदि कोई मुझसे विरोध रखे तो उसे कमठ की तरह एक तरफा ही बैर रखना होगा। मेरी स्पष्ट नीति है कि मैं कभी भी तत्त्वप्रचार प्रसार की गतिविधियों में बाधक नहीं बना हूँ और सदैव ऐसी गतिविधियों की सहृदय प्रशंसा ही करता रहा हूँ। उन्होंने अपनी मातुश्री का स्मरण करते हुये कहा कि मेरी माँ कहा करती थीं कि 'बेटा पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाये पर माता कभी कुमाता नहीं होती'; उसीप्रकार मैं कहना चाहता हूँ कि शिष्य भले ही कुशिष्य हो जाये पर यह गुरु कभी भी कुगुरु नहीं होगा।

डॉ. भारिल्ल के उक्त उद्बोधन को सुनकर उपस्थित जन समुदाय भाव-विभोर हो गया तथा सभी के हृदय का मनोमालिन्य धुल गया।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के उपाध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर ने दिया।

आपके अतिरिक्त विद्वानों में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर मंचासीन थे।

मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अमृतभाई मेहता एवं श्री वसन्तभाई दोशी ने तिलक लगाकर, माल्यार्पण से स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री गम्भीरमलजी प्रकाशचन्दजी सेमारीवाले अहमदाबाद ने किया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री सेवन्तिलालजी अमृतलाल गाँधी अहमदाबाद थे। इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री निहालचन्दजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री सुभाषचन्दजी जैन नांगलोई दिल्ली ने किया।

अब लाइव प्रवचन इन्टरनेट पर..

जयपुर : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 30 जुलाई को पं. शिखरचन्दजी विदिशा के करकमलों से इन्टरनेट का उद्घाटन हुआ जिससे शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम इंटरनेट पर लॉइव हो गये और यह शिविर पूरे विश्व से जोड़ दिया गया।

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि आज वास्तव में जैनधर्म ने दुनिया को मुट्ठी में किया है। विश्व में सभी लोग **www.ustream.tv/channel/ptst** इस वेबसाईट पर शिविर के दैनिक कार्यक्रमों को सुन सकेंगे और देख भी सकेंगे। इसमें और एक विशेषता है कि ये सभी कार्यक्रम डाऊनलोड होंगे, जिससे हम उसे कभी भी देख सकेंगे।

इस पावन अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि आज तक मात्र एक जगह पर प्रवचन सुने जाते थे, लेकिन आज पूरा विश्व सुनेगा। यह जैनधर्म के प्रचार के लिये बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इन कार्यक्रमों को अनेक देशों में सुना गया और अनेक देशों से इसकी प्रशंसा स्वरूप ई-मेल भी आये।

सम्पादकीय –

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु (33)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

५. अन्यत्वानुप्रेक्षा में कहा है कि ह्न शरीरादि बाह्य द्रव्य भी सब अपने से जुदे हैं और मेरा आत्मा ज्ञानदर्शनस्वरूप है, इसप्रकार अन्यत्व भावना का चिन्तवन करना ही अन्यत्वानुप्रेक्षा है।

निश्चयनयपरक अन्यत्वानुप्रेक्षा का कथन करते हुए कहा है कि शरीर से अन्यत्व का चिन्तन करना अन्यत्वानुप्रेक्षा है। बन्ध की अपेक्षा अभेद होने पर भी लक्षण के भेद से 'मैं शरीर से अन्य हूँ', शरीर ऐन्द्रियक है, मैं अतीन्द्रिय हूँ। शरीर अज्ञ है, मैं ज्ञाता हूँ। शरीर अनित्य है, मैं नित्य हूँ। शरीर आदि–अन्तवाला है और मैं अनाद्यनन्त हूँ। संसार में परिभ्रमण करते हुए भूतकाल से मैंने लाखों शरीर धारण किये हैं, परन्तु मैं उनसे भिन्न ही हूँ। इसप्रकार शरीर से ही जब मैं अन्य हूँ, तब हे वत्स ! मैं बाह्य पदार्थों से भिन्न होऊँ तो इसमें क्या आश्चर्य है ? इसप्रकार मन का समाधान होने पर शरीरादि में स्पृहा उत्पन्न नहीं होती।

जो जीव परमार्थ से अपने स्वरूप से देह को भिन्न जानकर आत्मस्वरूप को सेता है, ध्यान करता है, उसके अन्यत्व भावना कार्यकारी है।

मेरे पुत्र हैं, मेरा धन है ऐसा अज्ञानी जन कहते हैं। इस संसार में जब शरीर ही अपना नहीं, तब पुत्र धनादि कैसे अपने हो सकते हैं ?

कहा भी है ह्न

'जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय।।'

तथा ह्न

जल–पय ज्यौं जिय तन मेला, पै भिन्न–भिन्न नहिं भेला।
तो प्रकट जुदे धन जामा, क्यों ह्वै इक मिलि सुतरामा।।

इस अन्यत्वानुप्रेक्षा का प्रयोजन यह है कि इसके चिन्तन से शरीरादि में स्पृहा उत्पन्न नहीं होती है और वैराग्य की वृद्धि होने पर मोक्षसुख की प्राप्ति होती है।

जो आत्मस्वरूप को यथार्थ में शरीर से भिन्न जानकर अपनी आत्मा का ही ध्यान करता है, उसके अन्यत्वानुप्रेक्षा कार्यकारी है।

जा तन में नित जिय वसै, सो न आपनो होय।
तो प्रत्यक्ष जो पर दरब, कैसे अपने होय।।

अर्थात् जिस शरीर में जीव नित्य रहता है, जब वह शरीर ही अपना नहीं होता, तब जो परद्रव्य प्रत्यक्ष पर है, वे अपने कैसे हो सकते हैं ?

मेरे न हुए ये, मैं इनसे, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्य लिये, निज समरस पीनेवाला हूँ।।

व्यवहारनयपरक अन्यत्वानुप्रेक्षा में यह कहा है कि माता–पिता, भाई, स्त्री आदि बन्धुजनों का समूह अपने कार्य के वश संबंध रखता है, परन्तु यथार्थ में जीव का इनसे कोई संबंध नहीं है अर्थात् ये सब जीव से जुदे हैं।

६. अशुचि अनुप्रेक्षा में कहा है कि ह्न वैराग्यभाव के उद्देश्य से देह के अपावनस्वरूप के चिन्तनपूर्वक निज स्वभाव की पवित्रता का चिन्तन करना ही अशुचि–अनुप्रेक्षा है। वास्तव में आत्मा देह से जुदा है, कर्मों से रहित है, अनन्त सुखों का घर है; इसलिए शुद्ध है। इसप्रकार निरन्तर भावना करते रहना अशुचिभावना का निश्चयपरक चिन्तन है।

जयचन्दजी छाबड़ा कहते हैं ह्न

निर्मल अपनी आतमा, देह अपावन गेह।
जानि भव्य निज भाव को, या सो तजो सनेह।।

जल में सेवाल (काई) है सो मल है या मैल है, उसे सेवाल की भांति आस्रव मलरूप या मैलरूप अनुभव में आते हैं, इसलिए वे अशुचि हैं–अपवित्र हैं और भगवान आत्मा तो सदा ही अतिनिर्मल चैतन्यमात्र स्वभावरूप से ज्ञायक है, इसलिए अत्यन्त शुचि ही है, पवित्र ही है।

व्यवहारनयपरक अशुचि–अनुप्रेक्षा में देह को दुर्गन्धमय, डरावनी, मलमूत्र से भरी, जड़ कहा है और क्षीण होनेवाली तथा विनाशीक स्वभाव वाली कहा है; इसतरह निरन्तर इसका विचार करना व्यवहार अशुचि भावना है।

७. आस्रवानुप्रेक्षा में आस्रवभाव को अशुचि, विपरीत, अध्रुव, अनित्य, अशरण, दु:ख के कारण, दु:खरूप और दु:ख फलवाले कहा हैं ह्न अतः आस्रव के विषय में ऐसा विचार करना तथा शुभाशुभ आस्रवभावों से भिन्न भगवान आत्मा अत्यन्त शुचि है, अविपरीत स्वभाववाला है, ध्रुव है, नित्य है, परमशरणभूत है, सुख का कारण है, सुख स्वरूप है और सुख रूप ही फलवाला है ह्न ऐसा चिन्तवन करना ही यथार्थ आस्रवानुप्रेक्षा है।

पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि ह्न

'जो योगन की चपलाई, तातैं है आस्रव भाई।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवंत तिन्हें निरवेरे।।'

पाप को पाप तो सारा जगत जानता है; ज्ञानी तो वह है, जो पुण्य को भी पाप जाने। तात्पर्य यह है कि जो पापास्रव के समान

पुण्यास्रव को भी हेय मानता है, वही ज्ञानी है। पण्डित जयचन्दजी कहते हैं ह्न

आतम केवलज्ञानमय, निश्चय दृष्टि निहार।
सब विभाव परिणाम मय, आस्रव भाव विडार।।

व्यवहारनयपरक आस्रवानुप्रेक्षा में साधक यह चिंतवन करता है कि कर्मों का आस्रव करनेवाली क्रिया से परम्परा से भी निर्वाण नहीं हो सकता है, इसलिए संसार में भटकानेवाले आस्रव हेय हैं।

आस्रवभाव इस लोक और परलोक में दु:खदायी हैं। महानदी के प्रवाह के वेग के समान तीक्ष्ण हैं तथा इन्द्रिय, कषाय और अव्रतरूप हैं। कषाय आदि भी इस लोक में, वध, बन्ध, अपयश और क्लेशादिक दु:खों को उत्पन्न करते हैं तथा परलोक में नानाप्रकार के दु:खों से प्रज्वलित नाना गतियों में परिभ्रमण कराते हैं। इसप्रकार आस्रव के दोषों को चिन्तवन करना आस्रवानुप्रेक्षा है।

भूधरदासजी कृत बारह भावना में कहा कि ह्न

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमे सदा।
कर्मचोर चहुँ ओर, सरवस लूटे सुध नहीं।।

आस्रवभाव दु:ख स्वरूप हैं, तथा आस्रवभावना के चिन्तन से आस्रवभाव का अभाव होकर संवर होता है। तत्त्वार्थसूत्र में भी बारह भावनाओं को संवर का कारण कहा है; अत: आस्रवभावना भी संवर की कारण सिद्ध हुई। वास्तव में आस्रवभावना के अन्तर्गत आस्रव के स्वरूप का अच्छी तरह चिन्तन करके आस्रवभाव के त्याग की भावना भायी जाती है।

जो मुनि साम्यभाव में लीन होता हुआ मोहकर्म के उदय से होनेवाले इन आस्रवभावों को त्यागने के योग्य जानकर उन्हें छोड़ देता है, उसी की आस्रवानुप्रेक्षा सफल है।

जीव जब तक आत्मा और आस्रव ह्न इन दोनों के अन्तर और भेद को नहीं जानता, तब तक वह अज्ञानी रहता हुआ क्रोधादिक आस्रवों में वर्तता है; क्रोधादिक में प्रवर्तमान उसके कर्म का संचय होता है। वास्तव में इसप्रकार जीव के कर्मों का बंध सर्वज्ञदेवों ने कहा है। जब यह जीव आत्मा का और आस्रवों का अन्तर और भेद जानता है, तब उसे बन्ध नहीं होता।

आस्रवतत्त्व में जो हिंसादिरूप पापास्रव हैं, उन्हें तो हेय जानता है तथा जो अहिंसादि पुण्यास्रव हैं, उन्हें उपादेय मानता है; परन्तु यह तो दोनों ही कर्मबन्ध के कारण हैं, इनमें उपादेयपना मानना ही मिथ्यादृष्टि है।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम आत्मा और आत्मा की ही पर्याय में उत्पन्न मोह–राग–द्वेषरूप–पुण्य–पापरूप आस्रवभावों की परस्पर भिन्नता भली–भाँति जानें, भली–भाँति पहिचानें तथा आत्मा के उपादेयत्व एवं आस्रवों के हेयत्व का निरन्तर चिन्तन करें, विचार करें; क्योंकि निरन्तर किया हुआ यही चिन्तन, यही विचार आस्रव–भावना है।

ध्यान रहे, उक्त चिन्तन, विचार तो व्यवहार–आस्रव भावना है। निश्चय–आस्रव भावना तो आस्रवभावों से भिन्न भगवान आत्मा के श्रद्धान, ज्ञान व ध्यानरूप परिणमन है।

८. संवरानुप्रेक्षा में आस्रव का निरोध करना संवर कहा है। यह संवर सुखस्वरूप है, सुख का कारण है तथा मोह–राग–द्वेष से विपरीत, सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रमय है, रत्नत्रयस्वरूप है। मोक्ष का कारण है।

निश्चयगुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय और चारित्र ह्न ये सभी संवर के कारण हैं। इस संवर से नवीन कर्म आने से रुकते हैं। जबकि व्यवहार गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय और चारित्र से मात्र पाप का संवर होता है और पुण्यबंध होता है। इसप्रकार विचार करना संवर भावना है।

शुद्धनिश्चय से तो जीव के संवर ही नहीं है; क्योंकि शुद्धात्मा तो पर और पर्याय से भिन्न एक अभेद तत्त्व ही है; इसलिए संवर के विकल्प से रहित आत्मा का निरन्तर चिन्तवन करना चाहिए।

यह साक्षात् संवर वास्तव में शुद्ध आत्मतत्त्व की उपलब्धि से होता है और वह शुद्धात्मतत्त्व की उपलब्धि भेदविज्ञान से ही होती है। इसलिए वह भेदविज्ञान अत्यन्त भाने योग्य है। जयचन्दजी छाबड़ा ने कहा है ह्न

निज स्वरूप में लीनता, निश्चय संवर जानि।
समिति गुप्ति संजम धरम, करैं पाप की हानि।।

पण्डित दौलतरामजी कहते हैं ह्न

जिन पुण्य पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके।।

युगलजी ने कहा है ह्न

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।।

व्यवहारनयपरक संवरानुप्रेक्षा में मन, वचन, काय की शुभ प्रवृत्तियों से अशुभोपयोग का संवर होता है और केवल आत्मा के ध्यानरूप शुद्धोपयोग से शुभयोग का संवर होता है तथा शुद्धोपयोग से जीव के धर्मध्यान और शुक्लध्यान होते हैं, इसलिए संवर का कारण ध्यान है ह्न ऐसा निरंतर विचारते रहना संवर अनुप्रेक्षा है।

संवरानुप्रेक्षा का मूल प्रयोजन यह है कि इसका चिन्तवन करनेवाले जीव के संवर में निरन्तर उद्यमशीलता बनी रहती है और इससे मोक्षपद की प्राप्ति होती है। **(क्रमश:)**

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 24 अगस्त 09 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 23 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 30 जुलाई 09 तक हमारे पास 457 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 30 जुलाई 09 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 78 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों में ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.मुम्बई (सीमंधर जिनालय–भारतीय विद्या भवन) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर **4.इन्दौर :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **5.उदयपुर (सेक्टर–3) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **६.सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.दिल्ली (विश्वासनगर) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी **8.उज्जैन :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन **9.मुम्बई :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद **10.भावनगर :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना **11. मुम्बई (दादर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **12. अलीगढ़ :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, मंगलायतन **13.मुम्बई (भायन्दर वेस्ट) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना **14.विदिशा (किला अन्दर) :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **15. बैंगलोर :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **16.कोलकाता :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **17. जयपुर :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **18.सागर (महावीर जिनलाय) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन **19.अशोकनगर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा **20. अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. शैलेशभाई तलोद **21. अलीगढ़ :** पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर **22. राजकोट :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ।

विदेश में ह्न 1. नाइरोबी (अफ्रीका) : पण्डित अभयकुमारजी देवलाली **2. डलास (यू.एस.ए.) :** पण्डित दिनेश भाई शाह, मुम्बई **3. डलास (यू.एस.ए.) :** वि. उज्ज्वला शाह (मुम्बई) **4. लन्दन (यू.के.) :** पण्डित सुनील जैनापुरे, राजकोट **5. कनाड़ा :** विदुषी राजकुमारी जैन, दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. **इन्दौर (शक्कर बाजार)** : पं. श्री महेन्द्रकुमारजी शास्त्री, भिण्ड 2. **भोपाल (चौक)** : डॉ.दीपकजी शास्त्री, जयपुर 3. **मन्दसौर (कालाखेत)** : डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन, जयपुर 4. **इन्दौर (साधनानगर)** : पं. श्री देवेन्द्रकुमारजी, बिजौलिया 5. **भोपाल (कोहफिजा)** : पं. श्री मानमलजी कोटा 6. **ग्वालियर (फालका बाजार)** : पं. श्री शिखरचन्दजी, विदिशा 7. **छिन्दवाड़ा** : पं. श्री अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड 8. **सागर (मकरोनिया)** : पं. श्री प्रद्युम्नकुमारजी, मुजफ्फरनगर 9. **शिवपुरी (स्वाध्याय भवन)** : पं. श्री सुरेशचन्दजी, टीकमगढ़ 10. **गुना (वीतराग–विज्ञान)** : पं. श्री संजयजी सेठी शास्त्री, जयपुर 11. **बड़नगर** : ब्र. अमित भैया, विदिशा 12. **टीकमगढ़** : वि. पुष्पा जैन, खण्डवा 13. **सिलवानी** : ब्र. सुधाबेन छिन्दवाड़ा 14. **इन्दौर (पलासिया)** : पं. श्री श्रेणिक जैन, जबलपुर 15. **भिण्ड (परमागम मंदिर)** : पं. श्री प्रवीणजी शास्त्री, जयपुर 16. **फोपनार** : पं. श्री निकलंक जैन, मंगलायतन 17. **रतलाम (तोपखाना)** : पं. श्री विवेक जैन, छिन्दवाड़ा 18. **इन्दौर (गांधीनगर)** : पं. श्री आराध्य टडैया 19. **हरदा** : श्रीमती कुसुमलता जैन, हरदा 20. **सिरोंज** : पं. श्री देवेन्द्रकुमारजी, सिंगोडी 21. **कुचड़ौद** : पं. श्री राहुल शास्त्री, बदरवास 22. **करेली** : पं. श्री अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़ 23. **बीना** : पं. श्री विपिनकुमारजी शास्त्री, मुम्बई 24. **खुरई** : पं. मिश्रीलालजी जैन, केकड़ी 25. **सिंगोली** : पं. श्री राजेशकुमारजैन, शास्त्री 26. **निसईजी** पं. अंकुर शास्त्री, देहगाँव।

राजस्थान प्रान्त

1. **भरतपुर** : पं. श्री अरुणकुमारजी शास्त्री, अलवर 2. **कोटा (रामपुरा)** : पं. श्री अनुभव शास्त्री, कानपुर 3. **केशवनगर – उदयपुर** : पं. श्री खेमचन्दजी शास्त्री, उदयपुर 4. **अजमेर** : पं. श्री श्रेयांसजी शास्त्री, जबलपुर 5. **कोटा (इन्द्र विहार)** : पं. श्री कोमलचन्दजी टडा, द्रोणगिरि 6. **उदयपुर (मु. मंडल)** : पं. श्री सत्येन्द्रजी बीना 7. **उदयपुर (सेक्टर–11)** : पं. श्री जयकुमारजी बारां 8. **भीलवाड़ा** : पं. श्री विक्रांत पाटनी, झालरापाटन 9. **बीकानेर** : प. श्री कैलाशचन्दजी मोमसार 10. **शाहबाद** : पं. श्री भगवतीप्रसादजी शास्त्री 11. **रामगढ़** : पद्माकर शास्त्री, जयपुर 12. **देवली (चन्द्रप्रभ मंदिर)** : पं. श्री धर्मचन्दजी जैन, जयथल

महाराष्ट्र प्रान्त

1. **मुम्बई (बोरीवली)** : पं. श्री संजय शास्त्री, जेवर, अलीगढ़ 2. **मुम्बई (घाटकोपर)** : ब्र.नन्हे भैया, सागर 3. **देवलाली** : पं. श्री सुदीपजी जैन, बीना 4. **मुम्बई (बसई)** : पं. श्री ऋषभकुमार शास्त्री, अहमदाबाद 5. **सोलापुर (श्रीआदिनाथ मंदिर)** पं. श्री धनसिंहजी, पिड़ावा 6. **मुम्बई (दहीसर)** : पं. श्री किशोरजी धोगड़े, मुम्बई 7. **मुम्बई (मलाड)** : पं. श्री राजकुमारजी शास्त्री, बाँसवाड़ा 8. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय और भारतीय विद्या भवन)** : पं. श्री अनेकान्त भारिल्ल, मुम्बई 9. **पुणे (स्वा. मंडल)** : पं. श्री अरहंत प्रकाश झांझरी, उज्जैन 10. **सोलापुर : (बुबने)** पं. रवीन्द्रजी काले, कारंजा 11. **शिरडशहापुर** : पं. श्री प्रशांतजी काले, राजूरा 12. **मुम्बई (जागेश्वरी)** : वि. स्वानुभूति टडैया शास्त्री, मुम्बई 13. **मुम्बई (डॉवीवली)** : पं. श्री सुधीर शास्त्री, अमरमऊ।

(शेष अगले अंक में)

चन्देरी में भूमि शुद्धि सम्पन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ स्थानीय नये बस स्टेण्ड पर निर्माणाधीन भगवान ऋषभदेव समवशरण जिनमंदिर की भूमि शुद्धि का कार्यक्रम दिनांक 28 जून को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुवात श्री चौबीसी जिनमंदिर में विधान से हुई। पश्चात् वहाँ से निर्माणाधीन समवशरण मंदिर तक घटयात्रा निकाली गई। जहाँ भूमि शुद्धि के बाद श्री कुन्दनलालजी भारतीय की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर निर्माण का बीड़ा उठानेवाले श्री अखिल बंसल ने मंदिर निर्माण की आवश्यकता एवं रूपरेखा प्रस्तुत की। साथ ही श्री अमोलकचन्दजी एवं श्री विनयजी चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञातव्य है कि मंदिर निर्माण हेतु श्री अजितजी बंसल ने भूमि उपलब्ध कराई।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित सतीशजी जैन पिपरई ने सम्पन्न कराये।

शोक समाचार

1. **दलपतपुर निवासी** ब्र. कुन्दनलालजी मोदी की धर्मपत्नी **श्रीमती कुसुमबाई** का दिनांक 2 जुलाई को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी महिला थीं। आपके प्रयत्नों से ही आपके पूरे परिवार में धार्मिक संस्कार हैं। ज्ञातव्य है कि आपके परिवार में अनेक शास्त्री विद्वान हैं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान को कुल 1100/– रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. **लाखेरी जिला बूंदी निवासी श्रीमती लाडकंवर जैन** धर्मपत्नी श्री विमलकुमारजी का देहावसान हो गया है। अंतिम समय में समयसार गाथा–38 एवं मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ का चिन्तन करते हुये आपने देह का त्याग किया। आप जयपुर, सोनगढ, देवलाली, सोनागिरि आदि विभिन्न स्थानों पर आयोजित होनेवाले शिक्षण शिविरों में जाया करती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/–रुपये प्राप्त हुये हैं।

नवीन प्रकाशन

गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत महान टीका 'सम्यग्ज्ञान चंद्रिका' का हिन्दी अनुवाद डॉ. उज्ज्वलाबेन दिनेशभाई शाह मुम्बई द्वारा किया गया है। जो शीघ्र ही प्रकाशित होकर आ रहा है। यह ग्रन्थ 175/–(डाक खर्च सहित) का मनिआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। पं.दिनेशभाई शाह, 157/9, निर्मला निवास, सायन(ई.), मुम्बई। फोन ह्न (022) 24073581

मुम्बई में अष्टान्हिका पर्व

अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई में विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत सीमंधर जिनालय जबेरी बाजार में पं. नीलेशभाई, दादर में पण्डित कस्तूरचन्दजी भोपाल, मलाड (ई.) में पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, मलाड (एवर शाइन नगर) में पण्डित विपिनजी शास्त्री आगरा, बोरिवली में पण्डित सुदीपकुमारजी बीना, भायन्दर में पण्डित जयकुमारजी बांरा एवं दहीसर में पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा वालों का स्थानीय समाज को लाभ मिला। **ह्न बीनूभाई शाह**

(पृष्ठ 7 का शेष ....)

प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं है। यही कारण है कि श्वेताम्बर मत की समीक्षा करते समय पण्डित टोडरमलजी सबसे पहले उनके यहाँ उपलब्ध साहित्य के संबंध में बात करते हैं। अनेक तर्क और युक्तियों से यह प्रमाणित करते हैं कि आज जो ग्रन्थ उनके यहाँ उपलब्ध होते हैं; वे महावीर के प्रथम गणधर द्वादशांग श्रुत के ज्ञाता श्रुतकेवली इन्द्रभूति गौतम के द्वारा लिखित नहीं हो सकते।

द्वादशांगरूप जो श्रुतज्ञान है; उसमें आचारांग के अठारह हजार पद माने गये हैं; श्वेताम्बरों के यहाँ जो आचारांग सूत्र प्राप्त होता है, वह बहुत छोटा है।

इस पर वे कहते हैं कि उसका कुछ अंश रखा गया है। तब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यह अधूरा है या पूरा ?

यदि खो गया है तो यह प्रश्न भी उपस्थित होता है कि आरंभ का खोया है, मध्य का खोया है या फिर अन्त का खो गया है ? यदि मध्य का खोया तो प्राप्तांश टूटक रहा। ऐसा टूटा–फूटा ग्रन्थ प्रामाणिक कैसे माना जा सकता है ?

ऐसी भी अनेक निराधार बातें हैं, जो तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। जिन्हें सिद्ध करना संभव नहीं है; उन बातों को अछेरा कहकर सामनेवाले का मुँह बंद करने का प्रयास किया गया है।

'अछेरा' का अर्थ यह है कि इसे छेड़ो मत, इसके बारे में तर्क–वितर्क मत करो; बस यों ही मान लो कि ये ऐसा ही है, अतिशय है। इस बारे में भी पण्डितजी ने समीक्षा की है, जो मूलत: पठनीय है।

इसके बाद श्वेताम्बरों द्वारा माने गये देव, गुरु और धर्म के संबंध में विस्तार से विचार किया गया है।

उक्त सन्दर्भ में विस्तारभय से यहाँ कुछ विशेष कहना संभव नहीं है; जिन्हें विशेष जिज्ञासा हो, वे मोक्षमार्गप्रकाशक के उक्त प्रकरण का गंभीरता से अध्ययन अवश्य करें। **(क्रमश:)**

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा धर्म प्रभावना

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ जून माह में मुंबई से पधारी डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा 11 दिनों तक धर्म प्रभावना हुई। आपके द्वारा **नजरिया बदलना है (द्रव्य दृष्टि)** विषय पर प्रौढ कक्षा एवं **आँखों देखी (प्रमाणज्ञान)** विषय पर किशोर एवं बालकक्षा ली गई। भिण्ड से लौटते समय ग्वालियर में भी आपके 2 प्रवचन हुये, जिसमें **अपने में अपनापन और पर में परायापन** (सम्यग्दर्शन क्यों और कैसे?) विषय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

सम्पादक संघ की यात्रा तिथि परिवर्तन

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के तत्त्वावधान में 8 से 16 अगस्त तक आयोजित अहिंसा सद्भावना यात्रा की तिथि में परिवर्तन किया जा रहा है। यात्रा की नई तिथि बाद में घोषित की जायेगी। **ह्न अखिल बंसल**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 33

आठवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यह मोक्षमार्गप्रकाशक नामक शास्त्र है। इसमें पाँचवें अधिकार से गृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्याज्ञान और गृहीत मिथ्याचारित्र का विवेचन आरंभ हुआ है; जिसमें अभी जैनेतर मतों की समीक्षा संबंधी प्रकरण चल रहा है। इस पाँचवें अधिकार की विषयवस्तु का उल्लेख करते हुए '**पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व**' में लिखा गया है ह्न

''पाँचवें अधिकार में गृहीत मिथ्यात्व का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अंतर्गत विविध मतों की समीक्षा की गई है ह्न जिसमें सर्वव्यापी अद्वैतब्रह्म, सृष्टिकर्तावाद, अवतारवाद, यज्ञ में पशु-हिंसा, भक्तियोग, ज्ञानयोग, मुस्लिममत, सांख्यमत, नैयायिकमत, वैशेषिकमत, मीमांसक-मत, जैमिनीयमत, बौद्धमत, चार्वाकमत की समीक्षा की गई है तथा उक्त मतों और जैनमत के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अन्य मतों के प्राचीनतम महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के आधार पर जैनमत की प्राचीनता और समीचीनता सिद्ध की गई है। तदनन्तर जैनियों के अंतर्गत सम्प्रदाय श्वेताम्बरमत पर विचार करते हुए स्त्रीमुक्ति, शूद्रमुक्ति, सवस्त्रमुक्ति, केवली-कवलाहार-निहार, ढूंढकमत, मूर्तिपूजा, मुंहपत्ति आदि विषयों पर युक्तिपूर्वक विचार किया गया है।[१]''

अन्यमतों से जैनमत की तुलना करते हुए कहा था कि जैनदर्शन वीतरागभाव को धर्म मानता है; इसलिए सम्पूर्ण जिनवाणी में यत्र-तत्र-सर्वत्र वीतराग भाव का ही पोषण किया गया है।

मैंने स्वयं देव-शास्त्र-गुरु पूजन की जयमाला में जिनवाणी की स्तुति के प्रकरण में लिखा है कि ह्न

राग धर्ममय धर्म रागमय अबतक ऐसा जाना था।
शुभकर्म कमाते सुख होगा बस अबतक ऐसा माना था।।
पर आज समझ में आया है कि वीतरागता धर्म अहा।
रागभाव में धर्म मानना जिनमत में मिथ्यात्व कहा।।
वीतरागता की पोषक ही जिनवाणी कहलाती है।
यह है मुक्ति का मार्ग निरन्तर हमको जो दिखलाती है।।

पंचास्तिकाय की समयव्याख्या नामक टीका में लिखा है कि **समस्त शास्त्रों को तात्पर्य एकमात्र वीतरागता ही है।**[२]

पण्डित टोडरमलजी तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ह्न इन तीनों को ही वीतरागता के रूप में देखते हैं। वे लिखते हैं ह्न

''इसलिए बहुत क्या कहें ह्न जिसप्रकार से रागादि मिटाने का श्रद्धान हो, वही श्रद्धान सम्यग्दर्शन है; जिसप्रकार से रागादि मिटाने का जानना हो, वही जानना सम्यग्ज्ञान है तथा जिसप्रकार से रागादि मिटें, वही आचरण सम्यक्चारित्र है ह्न ऐसा ही मोक्षमार्ग मानना योग्य है।[१]''

पण्डितजी के उक्त कथन में सम्यग्दर्शनादि तीनों की परिभाषाओं में रागादि को मेटना ही मुख्यरूप से विद्यमान है। जैनदर्शन की मूल भावना तो यही है।

उक्त संदर्भ में पण्डितजी की निम्नांकित पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं ह्न

''जैनमत में एक वीतरागभाव के पोषण का प्रयोजन है; सो कथाओं में, लोकादिक में निरूपण में, आचरण में व तत्त्वों में; जहाँ-तहाँ वीतराग भाव की पुष्टि की है। तथा अन्यमतों में सरागभाव के पोषण का प्रयोजन है।[२]''

उक्त संदर्भ में पण्डितजी महाकवि भतृहरि के वैराग्यशतक का एक छन्द प्रस्तुत करते हैं; जो इसप्रकार है ह्न

एको रागिषु राजते प्रियतमादेहार्द्धधारी हरो,
नीरागेषु जिनो विमुक्तकलनासङ्गो न यस्मात्परः।
दुर्वारस्मरवाणपन्नगविषव्यासक्तमुग्धो जनः,
शेषः कामविडंबितो हि विषयान् भोक्तुं न मोक्तुं क्षमः ।।१।।

रागी पुरुषों में तो एक महादेव शोभित होते हैं, जिन्होंने अपनी प्रियतमा पार्वती को आधे शरीर में धारण कर रखा है और वीतरागियों में जिनदेव शोभित हैं, जिनके समान स्त्रियों का संग छोड़नेवाला दूसरा कोई नहीं है। शेष लोग तो दुर्निवार कामदेव के बाणरूप सर्पों के विष से मूर्च्छित हुए हैं, जो काम की विडम्बना से न तो विषयों को भलीभांति भोग ही सकते हैं और न छोड़ ही सकते हैं।''

उक्त छन्द में सरागी देवी-देवताओं में महादेव को प्रधान कहा है और वीतरागियों में जिनदेव को प्रधान कहा है। इससे भी सिद्ध होता है कि जैनदर्शन में वीतरागता को ही धर्म माना गया है।

यह बात इतनी स्पष्ट है कि इसे जैनेतर साहित्यकार भी अच्छी तरह जानते थे, जानते हैं और जानते रहेंगे; पर आज जो देखने में आ रहा है, उससे लगता है कि जैनी लोग अपनी इस बात को भूलते जा रहे हैं और शुभराग को धर्म मानकर, उसी में मग्न हैं।

मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि आप अपने बाप-दादाओं के बही-खाते उठाकर देखिये। उनमें सबसे पहले 'वीतरागाय नमः' लिखा मिलेगा।

पुराने जमाने में दीपावली के अवसर पर घर के दरवाजे पर 'वीतरागाय नमः' लिखा जाता था और जब कोई पत्र लिखते थे तो सबसे पहले सबसे ऊपर 'वीतरागायः नमः' लिखते थे। शादी की लग्न पत्रिका में भी तथा निमंत्रण पत्रिकाओं में भी सबसे ऊपर 'वीतरागाय

१. पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ २५-२६
२. आचार्य कुन्दकुन्द : पंचास्तिकाय, गाथा १७२ की टीका

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ-२१३
२. वही, पृष्ठ १३७

नम:' लिखा जाता था। 'वीतरागता ही धर्म है' ह्न यह बात पीढ़ियों से हमारे रोम–रोम में समाहित रही है। हम सब अपने जन्म से यही प्रार्थना करते आ रहे हैं किह्न

इन्द्रादिक पद नहीं चाहूँ, विषयन में नहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजै, परमातम निजपद दीजै।।[१]

पर आज न मालूम क्या हो गया हमें; जो हम राग को ही धर्म मानने पर उतारू हैं। इस बात पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

जैनियों में भी दिगम्बर और श्वेताम्बर नाम से दो सम्प्रदाय हैं। पण्डितजी ने दोनों सम्प्रदायों में समागत गृहीत मिथ्यात्व संबंधी विकृतियों की भी खुलकर आलोचना की है। पर विशेष ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि श्वेताम्बर सम्प्रदाय संबंधी गृहीत मिथ्यात्व की चर्चा इसी पाँचवें अधिकार में की है और दिगम्बरों में प्राप्त होनेवाले गृहीत मिथ्यात्व संबंधी विकृतियों की चर्चा छठवें–सातवें अधिकार में की गई है।

दिगम्बर–श्वेताम्बर रूप में हुआ जैनियों का यह विभाजन अन्तिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु के अन्तिम काल में हुआ था।

आचार्य भद्रबाहु के नेतृत्व में जैन मुनियों का एक विशाल संघ उज्जैनी नगरी में चातुर्मास कर रहा था। आहार को जाते समय आचार्य श्री भद्रबाहु ने एक नग्न बालक को भूख से बिलखते हुए देखा। उस दृश्य को देखकर उन्होंने अपने निमित्तज्ञान से जाना कि यहाँ निकट भविष्य में १२ वर्ष तक का भीषण अकाल पड़नेवाला है।

जब उन्होंने यह बात सभी संघ को बताई और कहा कि यहाँ अपना निर्वाह होना संभव नहीं है; अत: हम सभी को कम से कम १२ वर्ष के लिए दक्षिण भारत की ओर चले जाना चाहिए।

उस समय मगध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य भी वहीं पर थे। यह सुनकर वे भी दीक्षित हो गये।

जब सभी संघ दक्षिण की ओर विहार करने लगा; तब जनता के अनुरोध पर संघ का एक छोटा हिस्सा वही रह गया। शेष सभी मुनिराज आचार्य भद्रबाहु के साथ दक्षिण भारत की ओर विहार कर गये। नव दीक्षित सम्राट चन्द्रगुप्त भी उनके साथ थे।

भीषण अकाल के कारण उज्जैनी की स्थिति जब ऐसी हो गई कि मुनिराज आहार करके लौटकर जंगल की ओर जाते थे तो लोग उनका भरा पेट देखकर, पेट को चीरकर भोजन निकाल कर खा जाते थे।

आपातकाल की ऐसी स्थिति में संघ ने आपात्कालीन व्यवस्था बनाई कि जब मुनिराज आहार को जावे, तब एक वस्त्र लपेट कर जावें, बर्तन लेकर जावें, भोजन उसमें लावे और आकर जंगल में आहार करें। आहार के लिए नगर में जाते समय एक ऐढ़ी–टेढ़ी लाठी भी साथ में रखें।

उसके पीछे चिन्तन यह था कि आहार बर्तन में लायेंगे तो लोग बर्तन ही छीनेंगे, पेट को तो नहीं चीरेंगे। कपड़ा इसलिए कि भोजन के बर्तन को ढंक कर लाया जा सके।

यद्यपि मुनिराजों को किसी से लड़ना नहीं है, लाठी से किसी को मारना भी नही है; तथापि निर्विष सर्प को भी फुंफकारना तो सीखना ही चाहिए, अन्यथा उनका रहना ही मुश्किल हो जायेगा। इस सिद्धान्त के अनुसार लाठी हाथ में रखना जरूरी समझा गया। लाठी का टेढ़ी–मेढ़ी होना भी इसलिए जरूरी था कि जिसे कोई चुराये नहीं। सुन्दरतम लाठी के चुराये जाने की संभावना अधिक रहती है।

आपातकाल समाप्त हो जाने पर जब यह कहा गया कि अब हम अपने मूलरूप नग्न दिगम्बर अवस्था में आ जायें तो बहुत कुछ लोग मूल अवस्था में आ गये, पर कुछ सुविधाभोगी तर्क करने लगे कि जब हम बारह वर्ष तक उक्त स्थिति में रहते हुए मुनिराज रह सकते हैं तो सदा क्यों नहीं रह सकते ?

इसप्रकार अकाल के समय उज्जैन में रह गया संघ भी विभाजित हो गया। जो लोग सफेद वस्त्र धारण करके भी अपने को मुनिराज मानने लगे थे, वे श्वेताम्बर कहलाये और शेष नग्न दिगम्बर संत दिगम्बर कहे जाने लगे। आचार्य भद्रबाहु के साथ गये लोग तो दिगम्बर थे ही।

इस घटना के पहले न तो कोई दिगम्बर कहा जाता था, न कोई श्वेताम्बर; सभी दिगम्बर ही रहते थे; पर सभी का नाम तो एक जैन साधु ही था।

श्वेताम्बर मुनिराज भी आरंभिक अवस्था में उस समय ही वस्त्र ग्रहण करते थे कि जब भोजन सामग्री लेने नगर में जाते थे, शेष काल जंगल में तो वे नग्न ही रहते थे; पर धीरे–धीरे ऐसी स्थिति आ गई कि वे चौबीसों घंटे वस्त्रों में रहने लगे।

भाग्य की बात है कि तबतक भगवान महावीर की वाणी कंठाग्र ही चल रही थी। जितना भी जैन साहित्य अभी उपलब्ध होता है, वह सभी आचार्य भद्रबाहु के बाद का ही है। अत: दोनों परम्पराओं का साहित्य भी स्वत: ही अलग–अलग हो गया।

दिगम्बराचार्यों ने जो साहित्य लिखा, वह तो उन्होंने स्वयं के नाम से ही लिखा और भगवान महावीर की आचार्य परम्परा से उसे जोड़ा। यही कहा कि भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य इन्द्रभूति आदि गणधरों से लेकर हमारे गुरु पर्यन्त जो अविच्छिन्न परम्परा चली आ रही है; हमें यह ज्ञान उसी से प्राप्त हुआ है और उसे ही हम लिखित रूप से व्यवस्थित कर रहे हैं; पर श्वेताम्बर आचार्यों ने जो साहित्य लिखा, उसे गणधरों द्वारा लिखित घोषित किया। नाम भी वैसे ही रखे जो द्वादशांग जिनवाणी में बताये गये हैं। जैसे आचारांग, सूत्रकृतांग आदि।

पर उन ग्रन्थों का जो स्तर है; वह द्वादशांग के पाठी गणधरदेव की

(शेष पृष्ठ 5 पर ....)

१. पण्डित दौलतराम : देवस्तुति का अंतिम छन्द

2 अगस्त 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर स्थित नवीनीकृत

प्रवचन मण्डप का उद्घाटन समारोह

जयपुर : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन के प्रवचन मण्डप के नवीनीकरण का कार्य विगत 5 महिनों से चल रहा था; जो कि अब अपनी पूरी साज-सज्जा के साथ बनकर तैयार हो चुका है। इस नवीनीकृत सुन्दर विशाल प्रवचन मण्डप का शुद्धिकरण एवं उद्घाटन समारोह आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के पूर्व शनिवार, दिनांक 25 जुलाई, 2009 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन एवं शांतिविधान के पश्चात् मंत्रोच्चार पूर्वक प्रवचन मण्डप का शुद्धिकरण हुआ। तत्पश्चात् जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

प्रवचन मण्डप का विधिवत् उद्घाटन श्रीमती शशि-प्रकाशचन्द, अमित, विवेक सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से किया गया।

शांतिविधान के आयोजनकर्त्ता श्रीमती सूरजदेवी-जमनालाल कैलाशचन्द प्रकाशचन्द चेतनलाल रतनलाल सेठी परिवार लाल कोठी जयपुर थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने टोडरमल महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

इस मांगलिक प्रसंग पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री जमनालालजी सेठी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के शिक्षा, श्रम एवं रोजगार मंत्री माननीय मास्टर भंवरलालजी मेघवाल तथा विशिष्ट अतिथि माननीय महेशजी जोशी (सांसद-जयपुर) के अतिरिक्त ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, देश की अनेक संस्थाओं से जुडे प्रसिद्ध समाजसेवी श्री एन.के.सेठी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री राजेन्द्रजी गोधा आदि अनेक विशिष्ट महानुभाव मंचासीन थे।

सभी अतिथियों का तिलक एवं माल्यार्पण कर स्वागत स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका एवं ट्रस्टी ब्र. यशपालजी जैन ने किया। सभा को संबोधित करते हुये श्री प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर ने पुण्य-पाप के फल में हर्ष-विषाद न करने की भावना भाते हुये कहा कि मैं 30-35 वर्षों से टोडरमल स्मारक की गतिविधियों को देख रहा हूँएवं उसका लाभ ले रहा हूँ। यहाँ से पूरे विश्व में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार का अद्भुत कार्य हो रहा है। मेरे लिये यह अपने घर जैसा है; अत: मेरे मन में इस प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का भाव आया और इसके लिये डॉ. साहब ने स्वीकृति दी, इसकी मुझे प्रसन्नता है। मेरी भावना है कि यहाँ से तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ इसी प्रकार दिनदूनी रात चौगुनी बढती रहे।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण कु. परिणति पाटील ने किया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने प्रवचन मण्डप के नवीनीकरण का कार्य करानेवाले सरल हृदयी माननीय श्रीमान् प्रकाशचन्दजी सेठी को **श्रावक शिरोमणी** की उपाधि से अलंकृत किया।

लगातार पाँच माह से दिन-रात अथक् परिश्रम कर रहे युवा कार्यकर्त्ता श्री पीयूषजी शास्त्री, इंजिनीयर श्री अजितजी बंसल, श्री शैलेन्द्रजी गुरहा, आर्किटेक्ट श्री विकासजी जैन आदि का अभिनन्दन किया गया।

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

डॉ. भारिल्ल को अमेरिका में अवार्ड

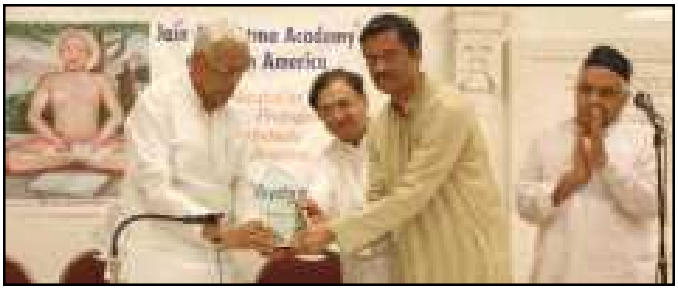

लॉस एंजिल्स में जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नोर्थ अमेरिका (**JAANA**) के नौवें वार्षिक आध्यात्मिक शिविर (दिनांक 29 जून से 2 जुलाई) के अवसर पर **JAANA** की ओर से श्री अतुलभाई खारा और श्री निरंजनभाई शाह ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को 75 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अवार्ड अर्पित किया।

इस अवसर पर जाना के प्रेसिडेंट श्री दिलिपभाई शाह एवं लॉस एंजिल्स जैन सेन्टर के प्रेसिडेन्ट श्री अशोक सावला एवं श्री नरेश पालकीवाला ने दादा का शॉल भेंट कर अभिनन्दन किया।

JAINA के प्रेसिडेन्ट ने दादा के 25 वर्षों के योगदान को सराहते हुये उनका आभार व्यक्त किया।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पण्डित धीरजभाई मेहता ने कई संस्मरणों को याद करते हुये कहा कि उन्हें भी दादा के साहित्य से बहुत कुछ सीखने को मिला है और वे भी व्यवहार से निश्चय की ओर बढने लगे हैं।

स्थानकवासी संप्रदाय से तरलाबेन दोशी ने पूरे जैन समाज के लिये दिये गये डॉ.भारिल्ल के अभूतपूर्व योगदान की खुले हृदय से सराहना की। उन्होंने कहा कि 'अमेरिका में आकर ही मुझे भारिल्लजी के साहित्य को पढने का मौका मिला। आज जैन समाज में ऐसा कोई दूसरा भारिल्ल हो तो बताओ।'

इस प्रसंग पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री पूरणचन्दजी गोदीका की सुपुत्री श्रीमती रोशनी सेठी ने गुणमालाजी भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

ध्यान रहे ऐसा ही अवार्ड गत वर्ष जैन एसोसिएशन इन नार्थ अमेरिका (जैना) ने भी आपको प्रदान किया था।

इस अवसर पर उपस्थित सारे अध्यात्म प्रेमियों ने अध्यात्म मार्ग में लगे रहने और आगे बढने का संकल्प लिया। **ह्न अतुल खारा, मंत्री जाना**

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127